

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namani.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

यात्यानप्रनामुद्रां तस्या।स्यप्रतोपात्रस्य जलियकोणस्याक्षाक्राम् द्यास्य म्र कालीर्यानस्य गंगे नेसादिनानि मंत्र्यः।म्रले नाष्ट्यार्मित्रम्यः। धेनामतीन्स्यतास्य मुद्र यात्रर्थ्यमानसोपनारसं प्ण्यनाम्हलेज कंग्रहीसात्समुद्रया आदिक्षातेः सिन्द्रमा



Acc. No. - 26+8 M-1817

Title - HIRAMNERINGER:

Author - 3

Pale - 8

Sub - HON, Charants:

folio - 6

Xerox - 6

त्याव में प्रणवादिन मों ते प्रस्के शिर्मित्री श्यम् निवधयात्रिः प्रोह्य अवशिष्ट न ने विस् ज्या हिसी प्रशास्य स्वीमं ह ने देवी य शोत स्पाद्य स्वीमं ह ने देवी य शोत स्पाद्य स्वीमं ह ने देवी य शोत स्पाद्य स्वाद्य स्वीमं ह ने देवी य शोत स्पाद्य या स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद स्वाद

ध्याला अन्नीपशुहं पर्दित मंत्रेणति छका यो आ स्फल्य ह स्ती प्रशाल्य म् लेनदिशाण हस्ते जत्र ही लावह ना साध्य ना बंस रं धि स्छित प्रमा महिनेकी सूर्व विभाज्य ग राजदेत विवरा ने जमारी जिथितिर्गम्य

तजनवामकरेन्द्रात्यमुद्रयागिलतिबं दुभिः अने ही अम्बनमा किनीस्वाहा हित श्यमक् ढं आत्मत्वायस्वाहा शहित्यक् ढं विद्यात लाय॰ ततीयक् ढंशिवतलाय॰ पुनस्ततीयक् ढं शिवतले॰ दितीयक् ढंविद्यातलं॰ प्रथमक् ढंआ एनत्वं॰ म्लंक् ढव्यं मुच्च द्स्त वित्रं शोधयामि तिविक्तार्यं स्विधायाया हस्ती प्रशाल्याल्ल नेजित्ना दायो शाया क्रीकी हैं हैं ही ही दिश्

काय णकािक्रियहेट्सिनेकािकेत्रम्शानवाशि येधीमहिक्रीकीक्रीहेहेहितिस्वाहानको या राष्ट्रचीद्यात्। श्रीस्वमंहत्म मध्यस्कायेशी दिश्वकािककावेद्दम्ब्लिखाहे तिविद्खंद ला १७३ हांही हंसः प्रकाशशिकसहितायमा तिरुपेरवायए पति व्यःस्वाहितिविद्खंद्ला। मलें चे चर्निश्री दिश्चण का लिका पादकां त प्यामी ति छैं । अही ही हंसः प्रकाशहाकिस हितमार्ने ह में रवपादकां तर्पया मी निश्चि।। संतर्य तनः।। अर्थ की की की है है ही ही दिश्चण का लिका ये विश्व हे दिश्चण का लिके श्रमशान्या शिये धी महीकी की की है है ही ही स्याहात नो घोरात्र चे

द्यात्र इत्यक्षेत्र शतवारं जिल्लापुन केन नम् न मक्षेत्र शतवारं जिल्लापुन केन व्या व पुनः दि यास ध्यान प् जा मुद्रांतं ब्ला ॐ य हो। ते॰ मने णन् तंज पंदे येसम कि ॐ ताम भिने जीत प साज्य न शने रोच नी कम के बुजु का दु गाँदे ना ध्यार्ण महं प्रचे सुतर सितर सेनमः रसु संस्य अस्य

पस्छा ये प्रण मेत् अने न शात स्तां बीक संध्या रखेन के में णाश्री दिसे णका की श्रीयतां ग्रेका इति प्रातः संध्या । एन मेथ मध्या कुसा या कुसोरावस्य तः का यी हित्र १ क्या दिति तां त्रीक संध्या विधिः



,CREATED=22.10.20 17:15
,TRANSFERRED=2020/10/22 at 17:17:11
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0004440
,Book Name=M-1817-TANTRIK SANDHYAVIDHI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF

[OrderDescription]